बकरियों में होने वाले प्रमुख रोगों के लक्षण एवं रोकथाम

दीपक कुमार[1], संजय कुमार[2] एवं सविता कुमारी[3]

"बकरी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है, जो गरीब किसानों एवं खेतीहर मज़दूरों के आय का एक अच्छा साधन है। ये पशु अन्य पशु प्रजातियों की तुलना में अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता रखते हैं। बकरियों की बीमारियों और उनसे बचाव की जानकारियों को अपना कर पशु पालक इन पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन तथा स्वास्थ्य की समुचित देख-भाल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं।"

बकरियों में होने वाले प्रमुख रोग :

● पी०पी०आर०/महामारी

पी०पी०आर० विषाणु जनित एक महत्वपूर्ण रोग है, जिससे बकरियों में अत्यधिक मृत्यु होती है, इसलिए इस रोग को बकरियों में महामारी या बकरी प्लेग भी कहते हैं। यह रोग विशेष रूप से कम उम्र के मेमनों और कुपोषित व परजीवी ग्रस्त बकरियों में गम्भीर एवं प्राणघातक होता है। रोग से ग्रस्ति बकरियों में ज्वर, छींक, आँख एवं नासिका से स्राव तथा दस्त प्रमुख लक्षण हैं। बकरियों के मुँह से बदबू आती है और चारा खाना कष्टदायक होता है। गर्भित पशुओं में पी०पी०आर० रोग से गर्भपात भी हो सकता है।

पी०पी०आर० ग्रसित बकरी

बकरियों का टीकाकरण ही इस रोग से बचाव का एक मात्र कारगार उपाय है। बचाव के लिए चार माह के उम्र में मेमनों को पी०पी०आर० का टीका दिया जाता है। इससे बकरियों में तीन साल तक के लिए रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता आती है। तीन साल बाद पुनः टीकाकरण करना चाहिए।

पी०पी०आर० ग्रसित बकरी

● सर्दी जुकाम/न्यूमोनिया

यह रोग कीटाणु, विषाणु, सर्दी लगने या प्रतिकूल वातावरण के कारण हो सकता है। इस रोग से पीड़ित बकरी को बुखार रहता है, सांस लेने में तकलीफ होती है एवं नाक से पानी निकलता रहता है। कभी–कभी न्यूमोनिया के साथ दस्त भी होता है। सर्दी–जुकाम की बीमारी बच्चों में ज्यादा होती है एवं इससे अधिक बच्चे मरते हैं।

न्यूमोनिया ग्रसित बकरी

[1]पशुव्याधि विज्ञान विभाग, [2]पशु पोषण विज्ञान विभाग एवं [3]पशु सूक्ष्म विज्ञान विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना।

इस रोग से ग्रसित बकरी या बच्चों को ठंड से बचावें तथा पशुचिकित्सक की सलाह पर उचित एण्टीबायोटिक दवा, ऑक्सीटेट्रा–साइकलिन डाइक्स्ट्रीसिन पेनसिलीन जेन्टामाइसिन इनरोफ्लोक्सासीन आदि दें। उचित समय पर उपचार करने से बीमारी ठीक हो जायेगी।

● पतला दस्त / छेरा रोग

यह खासकर पेट की कृमि या अधिक हरा चारा खाने से हो सकता है। यह कीटाणु, बैक्टीरिया या वायरस के कारण भी होता है। इसमें पतला दस्त होता है। खून या ऑव मिला हुआ दस्त हो सकता है। सर्वप्रथम उचित दस्त निरोधक दवा सल्फा एण्टीबायोटिक मेट्रान केओलिन ऑरीप्रीम नेवलोन आदि का प्रयोग कर दस्त को रोकना ज़रूरी है। दस्त वाले पशु को पानी में ग्लूकोज़ तथा नमक मिलाकर अवश्य पिलाते रहना चाहिए। कभी–कभी सुई द्वारा पानी चढ़ाने की भी आवश्यकता पड़ सकती है।

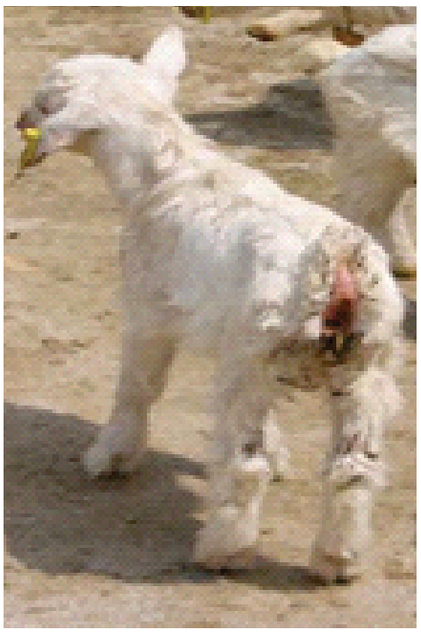

दस्तग्रसित बकरी

पतला दस्त ठीक होने यानी भेनाड़ी आ जाने के बाद मल की जाँच कराकर उचित कृमि नाशक दवा देते रहने से पतला दस्त की बीमारी कम होगी। इस बीमारी का उचित उपचार पशुचिकित्सक की सलाह से करें।

● खुरपका एवं मुँहपका

यह संक्रामक रोग है। इस रोग में जीभ, ओंठ, तालु तथा खुर में फफोले पड़ जाते हैं। बकरी को तेज बुखार हो सकता है। मुँह से लार गिरता है तथा बकरी लँगड़ाने लगती है। ऐसी स्थिति में बीमार बकरी को अलग रखें। मुँह तथा खुर को लाल पोटाश या पोटेशियम परमेगनेट के घोल से साफ करें। खुरों के फफोले या घाव को फिनाइल से धोना चाहिए। इस रोग से बचाव के लिए मई–जून माह में एफ०एम०डी० का टीका लगवा दें।

खुरपका एवं मुँहपका रोग ग्रसित बकरी एवं टीकाकरण

● आंत ज्वर / इन्टेरोटोक्सिमियां

इस बीमारी में खाने की रूचि कम हो जाती है। पेट में दर्द होता है, पतला दस्त तथा दस्त के साथ खून आ सकता है। दस्त होने पर नमक तथा चीनी मिला हुआ पानी देते रहें। एण्टीबायोटिक एवं सल्फा का प्रयोग करें। इस बीमारी से बचाव के लिए इन्टेरोटेक्सिमियां इन्टेरोटोक्सिमियां का टीका बरसात शुरू होने के पहले लगवा दें।

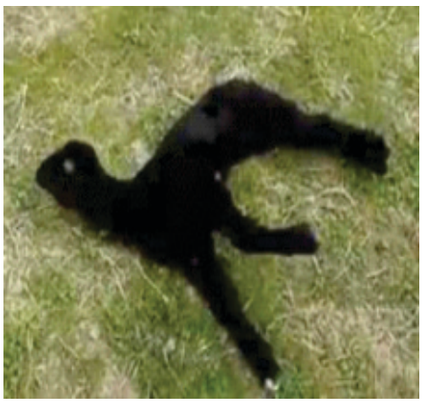

आंत ज्वररोग ग्रसित बकरी

● पेट फूलना / अफरा

इस बीमारी में भूख कम लगती है, पेट फूल जाता है, पेट को बजाने पर ढ़ोल जैसी आवाज़ निकलती है।

अफरा रोग ग्रसित बकरी

इस बीमारी में टिमपॉल पाउडर 15.20 ग्राम पानी में मिलाकर 2 घंटों के अंतराल पर दें। ब्लोटीसील दवा पिलावें तथा एभील की गोली खिलावें। कभी–कभी इन्जेक्शन देने वाली सुई को पेट में भोंक कर गैस बाहर निकालना पड़ता है।

● जोन्स रोग

पतला दस्त का बार–बार होना,बदबूदार दस्त आना तथा वज़न में क्रमशः गिरावट इस बीमारी की पहचान है। इससे ग्रसित बकरी को अलग रखें। अगर स्वास्थ्य में गिरावट नहीं हुई हो तो इस तरह के पशु का उपयोग मांस के लिए किया जा सकता है अन्यथा मरने के बाद इसे ज़मीन में गाड़ दें ताकि बीमारी फैले नहीं।

जोन्स रोगग्रसित बकरी

● थनैल

बकरी के थन में सूजन, दूध में खराबी, कभी–कभी बुखार आ जाना इस रोग के लक्षण हैं। दूध निकालने के बाद थन में पशु चिकित्सक की सलाह से दवा देनी चाहिए। थनैल वाले थन को छूने के बाद हाथ अच्छी तरह पानी एवं एण्टीसेप्टीक से साफ कर लेना चाहिए।

थनैल रोगग्रसित बकरी

● परजीवी रोग

बकरी में परजीवी से उत्पन्न रोग अधिक होते हैं। परजीवी रोग से काफी क्षति पहुँचती है। बकरी को आंतरिक परजीवी से अधिक हानि पहुँचती है। इसमें गोल कृमि, फीता कृमि, फ्लूक, एमफिस्टोम और प्रोटोजोआ प्रमुख हैं। इसके प्रकोप के कारण उत्पादन में कमी, वज़न

परजीवी रोगग्रसित बकरी एवं
कृमिनाशक दवा का प्रयोग

कम होना, दस्त लगना, शरीर में खून की कमी होती है। शरीर का बाल तथा चमड़ा रूखा–रूखा दिखता है। इसके कारण पेट भी फूल सकता है तथा जबड़े के नीचे हल्की सूजन भी हो सकती है। इसके आक्रमण से बचाव तथा उपचार के लिए नियमित रूप से बकरी के मल की जाँच कराकर कृमिनाशक दवा नीलवर्म, पानाकिआर एवेन्डाजोल आदि देनी चाहिए। कृमि नाशक दवा तीन से चार माह के अंतराल पर खासकर वर्षा ऋतु शुरू होने के पहले और बाद अवश्य दें।

आंतरिक परजीवी के अलावे वाह्य परजीवी से भी बकरी को बहुत हानि पहुँचती है। बकरी में विशेषकर छौनों में जूँ लग जाते है। गेमेक्सीन या मालाथिऑन या साईथिऑन का प्रयोग कर जूँ से बचाना ज़रूरी है। बकरी में खुजली की बीमारी भी वाह्य परजीवी के कारण ही होती है। बकरी को खुजली से बचाने के लिए प्रत्येक तीन महीने पर पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार मालाथिऑन या साईथिऑन आदि दवा के घोल मिश्रित पानी से नहलाना चाहिए। नहलाने के पहले बकरी को खासकर गर्दन, नाक, पूँछ, जाँघ के अन्दर का भाग तथा छाती के निचले भाग को सेभलॉन का घोल या कपड़ा धोने वाला साबुन लगा देना चाहिए। इसके बाद मालाथिऑन या साईथिऑन के घोल से बकरी को नहलावें तथा पूरे शरीर को ब्रश से रगड़ें। बकरी को दवा का घोल पीने नहीं दें क्योंकि यह जहर है। नहलाने के एक घंटा बाद जहाँ–जहाँ खुजली है, करंज का तेल लगा दें। खुजली वाले बकरी को एक दिन बीच कर 4–5 बार नहलाने से खुजली ठीक हो जायेगा। जिस दिन सभी बकरी को नहलाया जाय, उसी दिन बकरी घर में भी छिड़काव उसी दवा के 02 प्रतिशत घोल 01 लीटर पानी में 40 मिली लीटर दवा मिलाकर करें। इस तरह बकरी को खुजली से बचाया जा सकता है। दवा लगाने के बाद हाथ की सफाई अच्छी तरह करें।

● कोकसिडिओसिस

यह बकरी के बच्चों में अधिक होता है, लेकिन वयस्क बकरी में भी हो सकता है। इसके प्रकोप से पतला दस्त कभी–कभी खूनी भी हो सकता है।

कोकसिडि ओसिग्रसित बकरी

इससे बचाव के लिए पशुचिकित्सक की सलाह पर उचित दवा सल्फा एम्प्रोसील नेफटीन आदि दें। रोग हो जाने पर दस्त का इलाज करें तथा मल की जाँच के बाद उचित दवा दें।

● कन्टीजियस इकथाइमा

इस रोग से ग्रसित बकरी के बच्चों के ओठों पर तथा दोनों जबड़ों के बीच वाली जगह पर छाले पड़ जाते है जो कुछ दिनों के बाद सूख जाते है तथा पपड़ी पड़ जाती है। यह संक्रामक रोग है। इस रोग से ग्रस्त पशु को अलग रखें तथा ओठों को लाल पोटाश के घोल से धोकर बोरोग्लिसरिन लगावें।

कन्टोजियस इकथाईमा ग्रसित बकरी

निष्कर्ष :

बकरी एक बहुउपयोगी पशु है और बकरी व्यवसाय की सफलता का मुख्य आधार बकरियों का स्वस्थ रहना है। अतः विभिन्न बीमारियों से बचाव तथा उनके उचित उपचार व टीकाकरण की व्यवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण है।